

ANSWER KEY & MARKING SCHEME · CBSE CLASS 10

सूरदास के पद (क्षितिज भाग-2)

Hindi · Chapter 1 · Use this with the Board Paper · Companion to Quick Drill

HOW TO USE

Attempt the Board Paper first (closed-book, full time). Then come here. For 2-mark+ questions, compare your answer to the model. For 3-4 mark questions, also consult the **Topper Templates** below — these show the exact step-by-step structure that scores full marks per CBSE marking-scheme conventions.

MODEL ANSWERS · BOARD PAPER

खंड क — काव्यांश-आधारित बोध (6 अंक)

- Q1. निम्नलिखित प्रसंग पढ़कर उत्तर दीजिए — 'गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि उन्होंने हारिल पक्षी की भाँति मन-वचन-कर्म से कृष्ण-रूपी लकड़ी को थाम रखा है; जागते-सोते-स्वप्न में वे कृष्ण ही रटती हैं। ऐसे में उद्धव का लाया योग-संदेश उन्हें कड़वी ककड़ी एवं व्याधि-सा प्रतीत होता है।' (क) गोपियों ने स्वयं को किस पक्षी से तुलना की एवं क्यों? (2) (ख) उन्होंने योग-संदेश को किसके समान बताया? (2) (ग) इस प्रसंग का अंतर्निहित भाव/संदेश क्या है? (2) [6 marks]**

Ans: (क) गोपियों ने स्वयं की तुलना 'हारिल पक्षी' से की है। हारिल पक्षी सदैव अपने पंजों में एक लकड़ी थामे रहता है और उसे कभी नहीं छोड़ता; इसी प्रकार गोपियों ने भी मन-वचन-कर्म से कृष्ण-रूपी लकड़ी को दृढ़ता से थाम रखा है — जागते, सोते एवं स्वप्न में भी वे केवल 'कृष्ण-कृष्ण' रटती हैं। यह तुलना उनके अनन्य एवं एकनिष्ठ प्रेम को व्यक्त करती है। (ख) उन्होंने उद्धव के योग-संदेश को 'कड़वी ककड़ी' एवं रोग (व्याधि) के समान बताया, जिसे उन्होंने कभी न देखा, न सुना। विरह-पीड़ित हृदयों के लिए यह शुष्क निर्गुण-योग निरर्थक एवं कष्टकर है; वे व्यंग्य से इसे 'जोग ठगौरी' (ठगने वाली औषधि) भी कहती हैं। (ग) इस प्रसंग का अंतर्निहित भाव यह है कि अनन्य सगुण प्रेम-भक्ति निर्गुण ज्ञान-योग से श्रेष्ठ एवं सहज है। जिनका मन पहले से ही साकार कृष्ण को सौंपा जा चुका, उनके लिए निराकार की उपासना असंभव है। यह सगुण भक्ति की निर्गुण पर विजय का संकेत है तथा प्रेम की दृढ़ता एवं अनन्यता को रेखांकित करता है।

खंड ख — लघु उत्तरीय (3 × 3 = 9 अंक)

- Q2. इस पाठ का केंद्रीय वैचारिक द्वंद्व 'सगुण बनाम निर्गुण' है — स्पष्ट कीजिए कि सूरदास किसके पक्ष में हैं। [3 marks]**

Ans: भ्रमरगीत का मूल वैचारिक द्वंद्व सगुण (साकार, गुण-सहित कृष्ण) भक्ति बनाम निर्गुण (निराकार, गुणातीत ब्रह्म) उपासना का है। उद्धव गोपियों को निर्गुण-योग का उपदेश देते हैं, परंतु गोपियाँ तर्क देती हैं कि जिनका मन पहले से ही साकार कृष्ण को अनन्य रूप से सौंपा जा चुका है, उनके लिए निराकार-उपासना 'कड़वी ककड़ी' एवं व्याधि के समान निरर्थक है। 'हारिल की लकड़ी' दृष्टांत से वे अपनी सगुण-निष्ठा सिद्ध करती हैं तथा उद्धव को 'बड़भागी' कहकर निर्गुण-निरलिप्तता का उपहास करती हैं। सूरदास स्वयं सगुणोपासक कृष्णभक्त हैं, अतः वे स्पष्ट रूप से सगुण भक्ति के पक्ष में हैं — गोपियों के माध्यम से वे साकार प्रेम-भक्ति को शुष्क निर्गुण ज्ञान-योग से श्रेष्ठ एवं सहज सिद्ध करते हैं। इस प्रकार पाठ में सगुण भक्ति की निर्गुण पर विजय होती है।

- Q3. गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' क्यों कहती हैं? इसमें छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। [3 marks]**

Ans: गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' (बड़े भाग्यवाले) कहती हैं, परंतु यह सीधी प्रशंसा नहीं, अपितु तीखा व्यंग्य है। वे कहती हैं कि उद्धव कमल के पत्ते एवं तेल की गागर के समान हैं — जो जल में रहकर भी जल से अछूते रह जाते हैं। अर्थात् उद्धव कृष्ण के इतने निकट रहकर भी कभी प्रेम-रस में डूबे ही नहीं, उनका हृदय प्रेम से निर्लिप्त एवं शुष्क रहा। इसी कारण वे विरह की पीड़ा से 'बचे' रहे। गोपियों के अनुसार यही उनका 'सौभाग्य' है — किंतु वस्तुतः यह प्रेमहीनता का उपहास है। वे संकेत करती हैं कि जिसने प्रेम का सुख-दुख जाना ही नहीं, उसका जीवन एवं ज्ञान दोनों व्यर्थ हैं, चाहे वह कितना भी बड़ा योगी क्यों न हो। इस व्यंग्य से गोपियाँ अपने अनन्य प्रेम की श्रेष्ठता एवं उद्धव की निर्लिप्तता की रिक्तता — दोनों एक साथ सिद्ध कर देती हैं।

- Q4. इन पदों के आधार पर गोपियों के वाक्-चातुर्य (वाणी की चतुराई) की विशेषताएँ बताइए। [3 marks]**

Ans: इन पदों में गोपियाँ केवल विरहिणी नहीं, अपितु प्रखर बुद्धि एवं वाक्-चातुर्य से सम्पन्न नारियाँ हैं। उनकी वाणी की चतुराई कई रूपों में प्रकट होती है — (1) तर्कशक्ति: वे तर्क देती हैं कि अनन्य कृष्ण-प्रेमी हृदय के लिए निर्गुण-योग निरर्थक है, अतः उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं। (2) व्यंग्य: वे उद्धव को 'बड़भागी' एवं कमल-पत्र जैसा निर्लिप्त कहकर उपहास करती हैं। (3) दृष्टांत-कुशलता: 'हारिल की लकड़ी', 'गुड़-चीटी' एवं 'जोग ठगौरी' जैसे सटीक दृष्टांतों से वे अपने भाव सरलता से सिद्ध कर देती हैं। (4) कटाक्ष: वे कृष्ण पर भी 'अब अपनी राजनीति' का साहसी कटाक्ष करती हैं। इन सबमें मुहावरेदार, सरस ब्रजभाषा का सौंदर्य भी है। इस प्रकार गोपियों का वाक्-चातुर्य विरह, तर्क, व्यंग्य एवं उपालंभ का सुंदर सम्मिलन है, जो उद्धव के अहंकारी ज्ञान को सहज ही परास्त कर देता है।

Q5. गोपियों ने उद्धव के योग-संदेश को क्यों अस्वीकार कर दिया? उनके कम-से-कम तीन तर्क पाठ-संदर्भ सहित स्पष्ट कीजिए। [5

marks]

Ans: मथुरा जाकर राजा बने श्रीकृष्ण ने अपने सखा उद्धव को गोपियों के पास निर्गुण-निराकार ब्रह्म एवं योग का संदेश देकर भेजा, ताकि गोपियाँ विरह सह सकें। परंतु गोपियों ने इस संदेश को दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। (1) अनन्य प्रेम — गोपियाँ कहती हैं कि उनका मन हारिल पक्षी की भाँति कृष्ण-रूपी लकड़ी को मन-वचन-कर्म से थामे हुए है; जागते, सोते एवं स्वप्न में भी वे केवल कृष्ण ही रटती हैं। जब मन पहले से ही कृष्ण को सौंपा जा चुका, तब निर्गुण के लिए स्थान ही कहाँ बचा? (2) योग की निरर्थकता एवं पीड़ा — उनके लिए यह योग-संदेश 'कड़वी ककड़ी' एवं रोग (व्याधि) के समान है, जिसे उन्होंने कभी न देखा, न सुना; वे व्यंग्य से इसे 'जोग ठगौरी' (ठगने वाली औषधि) कहती हैं, जो उनकी विरह-पीड़ा घटाने के बजाय बढ़ाती है। (3) उद्धव पर व्यंग्य एवं कृष्ण पर कटाक्ष — वे उद्धव को 'बड़भागी' कहकर व्यंग्य करती हैं कि वे कमल-पत्र एवं तेल की गागर की भाँति प्रेम से अछूते, निर्लिप्त रहे; साथ ही कृष्ण पर भी कटाक्ष करती हैं कि जो स्वयं प्रेम-मर्यादा के रक्षक थे, अब 'राजनीति' (छल) पढ़ाने लगे हैं। इन तीनों तर्कों से गोपियाँ उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं। उनकी यह अस्वीकृति अज्ञान नहीं, अपितु सजग प्रेम-निष्ठा है — और यही भ्रमरगीत का मूल संदेश है : सगुण साकार भक्ति की निर्गुण निराकार ज्ञान-मार्ग पर विजय।

Q6. 'सूरदास के पदों' में गोपियों के विरह, अनन्य प्रेम एवं वाक्-चातुर्य का सम्मिलित चित्रण किस प्रकार हुआ है? विस्तार से लिखिए। [6

marks]

Ans: इन चार पदों में सूरदास ने गोपियों के विरह, अनन्य प्रेम एवं प्रखर वाक्-चातुर्य का अद्भुत सम्मिलित चित्रण किया है। (1) विरह की मार्मिकता — कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ अपार वियोग-वेदना में डूबी हैं; उनकी प्रेम-भरी अभिलाषा मन में ही रह जाती है, होंठों तक नहीं आ पाती। वे अपनी दशा 'गुड़ से लिपटी चींटी' जैसी बताती हैं — जो न चिपककर तृप्त होती है, न छूटकर मुक्त; इसी प्रकार वे न कृष्ण से मिल पाती हैं, न उन्हें भुला पाती हैं। यह वियोग-श्रृंगार का हृदयस्पर्शी चित्र है। (2) अनन्य प्रेम — गोपियाँ 'हारिल की लकड़ी' के दृष्टांत से अपने एकनिष्ठ प्रेम को व्यक्त करती हैं; उन्होंने मन-वचन-कर्म से कृष्ण को थाम रखा है, अतः निर्गुण-योग का संदेश उन्हें 'कड़वी ककड़ी' एवं व्याधि-सा लगता है। उनका प्रेम इतना दृढ़ है कि कोई ज्ञान या योग उसे डिगा नहीं सकता। (3) वाक्-चातुर्य एवं व्यंग्य — गोपियाँ विरहिणी होकर भी निरीह नहीं; वे उद्धव को 'बड़भागी' कहकर (कमल-पत्र/तेल-गागर जैसा निर्लिप्त) व्यंग्य करती हैं तथा कृष्ण पर 'अब अपनी राजनीति' का साहसी कटाक्ष करती हैं। उनके वचनों में तर्क उपालंभ एवं मुहावरेदार ब्रजभाषा का सौंदर्य है। इस प्रकार सूरदास विरह की कोमलता, प्रेम की दृढ़ता एवं वाणी के तेज — तीनों को एक साथ साधकर गोपियों के बहुआयामी चरित्र को जीवंत कर देते हैं, और साथ ही सगुण भक्ति की श्रेष्ठता भी सिद्ध कर देते हैं। यही इन पदों की कालजयी विशेषता है।

Q7. इन पदों में गोपियाँ अपने अनन्य प्रेम पर अडिग रहकर बाहरी उपदेश को अस्वीकार करती हैं। इससे एक विद्यार्थी को अपने लक्ष्य एवं मूल्यों के प्रति निष्ठा का क्या संदेश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए। (मूल्य-आधारित प्रश्न) [4 marks]

Ans: गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम पर इतनी अडिग हैं कि उद्धव का प्रलोभनकारी एवं तर्कपूर्ण योग-उपदेश भी उन्हें डिगा नहीं पाता; वे अपने हृदय की सच्ची निष्ठा को बड़ी सूझबूझ एवं दृढ़ता से बनाए रखती हैं। इससे एक विद्यार्थी को यह मूल्यवान संदेश मिलता है कि जब एक बार सच्चा लक्ष्य या मूल्य चुन लिया जाए, तो बाहरी दबावों, भटकावों एवं आकर्षक प्रलोभनों के सामने उस पर अडिग रहना चाहिए। एक विद्यार्थी के रूप में हम इस भाव को इस प्रकार अपना सकते हैं — अपने अध्ययन-लक्ष्य पर एकाग्रता बनाए रखकर, सोशल मीडिया एवं गलत संगति के भटकाव से बचकर, तथा कठिनाई में भी अपने नैतिक मूल्यों (सत्य, परिश्रम, अनुशासन) से समझौता न करके। साथ ही गोपियों की तरह विनम्र किंतु तर्कसंगत ढंग से अपनी बात रखने का साहस भी सीखना चाहिए। निष्ठा एवं विवेक का यही सम्मिलन सफलता की कुंजी है। (कोई भी तीन प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य।)

★ TOPPER ANSWER TEMPLATES

3 TEMPLATES · MEMORISE THE FORMAT

★ TOPPER TEMPLATE — 5 अंक — 'गोपियों ने उद्धव के योग-संदेश को क्यों अस्वीकार कर दिया? उनके तर्कों को स्पष्ट कीजिए।'

वार्षिक

Step 1 [1 mark]	प्रसंग एवं केंद्रीय कारण	मथुरा जाकर श्रीकृष्ण ने अपने सखा उद्धव को गोपियों के पास निर्गुण-निराकार ब्रह्म एवं योग का संदेश देकर भेजा, ताकि गोपियाँ विरह सह सकें। परंतु गोपियों का प्रेम कृष्ण के साकार रूप से अनन्य रूप से बंधा है, अतः निराकार की उपासना उनके लिए असंभव एवं निरर्थक है — यही उनकी अस्वीकृति का मूल कारण है।
Step 2 [1 mark]	पहला तर्क— अनन्य प्रेम (हारिल की लकड़ी)	गोपियाँ कहती हैं कि उनका मन तो हारिल पक्षी की भाँति कृष्ण-रूपी लकड़ी को दृढ़ता से पकड़े हुए है; जागते-सोते, स्वप्न में भी वे 'कृष्ण-कृष्ण' ही रटती हैं। जब मन पहले ही कृष्ण को सौंपा जा चुका, तब निर्गुण-योग के लिए स्थान ही कहाँ बचा? यह अनन्यता ही उनकी सबसे बड़ी असमर्थता है।
Step 3 [1 mark]	दूसरा तर्क— योग की अनुपयोगिता एवं पीड़ा	गोपियों के अनुसार योग का यह कड़वा संदेश उनके लिए 'कड़वी ककड़ी' एवं रोग (व्याधि) के समान है, जिसे उन्होंने कभी न देखा, न सुना। वे व्यंग्य करती हैं कि यह 'जोग ठगौरी' (ठगने वाली योग-औषधि) उन्हें ही बाँटी जा रही है, जबकि वे पहले से ही विरह-रोग से पीड़ित हैं — योग उनकी पीड़ा घटाता नहीं, बढ़ाता है।
Step 4 [1 mark]	तीसरा तर्क— उद्धव पर व्यंग्य एवं कृष्ण पर कटाक्ष	गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहकर व्यंग्य करती हैं कि वे कमल-पत्र एवं तेल की गागर की भाँति प्रेम-जल में रहकर भी अछूते रहे — अर्थात् कभी प्रेम में डूबे ही नहीं। वे कृष्ण पर भी कटाक्ष करती हैं कि जो स्वयं प्रेम-मर्यादा का पालन नहीं करते, वे अब 'राजनीति' (छल-नीति) पढ़ाने लगे हैं। यह तीखा वाक्-चातुर्य उद्धव को निरुत्तर कर देता है।
Step 5 [1 mark]	निष्कर्ष — सगुण की विजय	इस प्रकार गोपियाँ अनन्य प्रेम, योग की निरर्थकता एवं प्रखर व्यंग्य — तीनों आधारों पर योग-संदेश को अस्वीकार कर देती हैं। उनकी यह अस्वीकृति अज्ञान नहीं, सजग प्रेम-निष्ठा है। भ्रमरगीत का यही मूल संदेश है — साकार सगुण भक्ति की निराकार निर्गुण ज्ञान-मार्ग पर विजय।

COMMON LOSS OF MARKS:

- केवल 'गोपियाँ कृष्ण से प्रेम करती थीं' लिखकर रुक जाना — कम-से-कम तीन भिन्न तर्क आवश्यक।
- 'जोग ठगौरी', 'कड़वी ककड़ी', 'हारिल की लकड़ी' जैसे पाठ-शब्दों/प्रतीकों का उल्लेख न करना।
- अस्वीकृति को 'अज्ञान' बता देना — यह सजग अनन्य-प्रेम है, मूर्खता नहीं।

★ TOPPER TEMPLATE — 5 अंक — 'गोपियों के वाक्-चातुर्य एवं व्यंग्य की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए (हारिल/बड़भागी/राजनीति के सन्दर्भ में)।'

अधिकांश वर्षों में

Step 1 [1 mark]	वाक्-चातुर्य का परिचय	गोपियाँ केवल विरहिणी नहीं, अपितु प्रखर बुद्धि एवं वाणी की चतुराई से सम्पन्न हैं। वे उद्धव के शुष्क ज्ञान-योग का खंडन व्यंग्य, तर्क एवं उपालंभ के सम्मिलित अस्त्रों से करती हैं और उन्हें निरुत्तर कर देती हैं। यही वाक्-चातुर्य भ्रमरगीत का सबसे आकर्षक तत्त्व है।
Step 2 [1 mark]	अनन्यता का प्रतीक — हारिल की लकड़ी	'हारिल की लकड़ी' के दृष्टांत द्वारा गोपियाँ अपने अनन्य प्रेम को व्यक्त करती हैं — जैसे हारिल पक्षी सदैव एक लकड़ी थामे रहता है, वैसे ही उन्होंने मन-वचन-कर्म से कृष्ण को थाम रखा है। यह सरल किंतु अत्यंत मार्मिक प्रतीक उनकी दृढ़ निष्ठा को सिद्ध कर देता है।
Step 3 [1 mark]	व्यंग्य का शिखर — बड़भागी	उद्धव को 'बड़भागी' कहना प्रशंसा का छद्म है। गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव कमल-पत्र एवं तेल की मटकी की भाँति प्रेम-जल में रहकर भी निर्लिप्त रहे — अर्थात् कभी प्रेम का सुख-दुख जाना ही नहीं। यह 'सौभाग्य' वस्तुतः प्रेमहीनता का उपहास है — व्यंग्य का चरम उदाहरण।
Step 4 [1 mark]	कृष्ण पर कटाक्ष — राजनीति	गोपियाँ कृष्ण पर भी कटाक्ष करती हैं — जो पहले प्रेम एवं मर्यादा का पालन करते थे, अब राजा बनकर 'राजनीति' (छल-कूटनीति) पढ़ाने लगे हैं; उन्होंने हमें योग-संदेश भेजकर अपने प्रेम-दायित्व से मुँह मोड़ लिया। यह कटाक्ष उनकी निर्भीक तार्किक वाणी को दर्शाता है।
Step 5 [1 mark]	निष्कर्ष	इस प्रकार दृष्टांत (हारिल), व्यंग्य (बड़भागी) एवं कटाक्ष (राजनीति) — तीनों के सम्मिलन से गोपियाँ उद्धव एवं कृष्ण दोनों को बौद्धिक रूप से परास्त कर देती हैं। सूरदास इस वाक्-चातुर्य के द्वारा सगुण प्रेम-भक्ति की श्रेष्ठता एवं नारी-वाणी के तेज को अत्यंत कुशलता से चित्रित करते हैं।

COMMON LOSS OF MARKS:

- व्यंग्य को सीधी प्रशंसा समझ लेना — 'बड़भागी' एवं कमल-पत्र का व्यंग्यार्थ अनिवार्य।
- केवल विरह का वर्णन कर देना, चातुर्य/तर्क छोड़ देना।
- 'राजनीति' वाले कटाक्ष को भूल जाना — यह उच्च-अंक का बिंदु है।

★ TOPPER TEMPLATE — 3 अंक — 'दिए गए पद का काव्य-सौंदर्य (भाव + अलंकार + भाषा) स्पष्ट कीजिए।'

वार्षिक

Step 1 [1 mark]	भाव-पक्ष	पद का भाव गोपियों की विरह-व्यथा एवं कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम है। वे उद्धव के निर्गुण-योग को अस्वीकार कर अपने साकार-प्रेम की अटूट निष्ठा को व्यंग्य एवं उपालंभ के साथ प्रकट करती हैं — वियोग-श्रृंगार का मार्मिक चित्रण है।
Step 2 [1 mark]	अलंकार-पक्ष	पद में अनुप्रास अलंकार ('मधुकर'/'मन की मन ही'), दृष्टांत अलंकार ('हारिल की लकड़ी', कमल-पत्र, तेल की गागर) तथा रूपक/प्रतीक (भ्रमर = उद्धव) का सुंदर प्रयोग है। 'मन की मन ही माँझ रही' में अनुप्रास की छटा एवं भाव-गाम्भीर्य दोनों हैं।
Step 3 [1 mark]	भाषा एवं निष्कर्ष	भाषा परिमार्जित, कोमल एवं मधुर ब्रजभाषा है, जिसमें मुहावरेदार लोक-प्रयोग एवं संगीतात्मकता है। गेय पद-शैली, वियोग-श्रृंगार रस तथा सटीक प्रतीक-योजना मिलकर पद को सूरदास की काव्य-कुशलता का उत्कृष्ट उदाहरण बना देते हैं।

COMMON LOSS OF MARKS:

- केवल भाव लिखना, अलंकार न पहचानना (या केवल नाम देकर उदाहरण न देना)।
- ब्रजभाषा एवं गेयता का उल्लेख छोड़ देना।
- प्रतीक (भ्रमर/हारिल) को सौंदर्य-बिंदु के रूप में न जोड़ना।

MARKING SCHEME — GENERAL NOTES

- योग-अस्वीकृति वाले प्रश्न में अनन्य प्रेम (हारिल) + योग की निरर्थकता (कड़वी ककड़ी/जोग ठगौरी) + व्यंग्य (बड़भागी/राजनीति) — कम-से-कम तीन तर्क पाठ-संदर्भ सहित आवश्यक।
- 'बड़भागी' को सीधी प्रशंसा बताने पर अंक-हानि — व्यंग्यार्थ (कमल-पत्र/तेल-गागर जैसी निर्लिप्तता) अनिवार्य।
- सगुण-निर्गुण द्वंद्व में सूरदास का स्पष्ट सगुण-पक्ष एवं सगुण की विजय रेखांकित होनी चाहिए; 'दोनों समान' लिखने पर अंक कटते हैं।
- वाक्-चातुर्य के उत्तर में तर्क + व्यंग्य + दृष्टांत + कटाक्ष — चारों आयाम अपेक्षित।
- काव्यांश-आधारित उत्तर में भाव + प्रतीक/दृष्टांत की पहचान + अंतर्निहित संदेश — तीनों स्तर अपेक्षित।
- अलंकार/काव्य-सौंदर्य के प्रश्न में अलंकार का नाम मात्र नहीं, उदाहरण-सहित पहचान आवश्यक; ब्रजभाषा की कोमलता का उल्लेख अंक दिलाता है।